



## नागर्जुन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संकलन - भोसले पूजा राहुल रोहिणी  
तृतीय वर्ष कला

ऐदा हुआ था मैं,  
दीन हीन अपठीत किसी कृषक कुल में,  
आ रहा हूँ पीता, अभाव का आसव  
ठेठ बचपन से कवि ?  
मैं रुपक हूँ, दबी हुई दूब का हारा हुआ,  
नहीं कि चरने को दौड़ते,  
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में ।

हिन्दी और मैथिली साहित्य के विशिष्ट ही नहीं शीर्षस्थ रचनाकार श्री वैद्यनाथ मिश्र, जो मैथिली में यात्री और हिन्दी में नागर्जुन का जन्म सन १९११ की ज्येष्ठ पूर्णिमा को हुआ था । जन्मस्थान ननिहाल है और मूल पैतृकवास स्थान ग्राम तरैनी है जो दरभंगा (बिहार) जिला में पड़ता है । पिता का नाम गोकुल मिश्र था और माँ थी उमा देवी । पिता रुढ़ीवादी, संस्कारहीन, अशिक्षित, लापरवाह, घुमक्कड और कठोर व्यक्तित्व के व्यक्ति थे । उमादेवी सरल हृदय, ईमानदार, परिश्रमी एवं दृढ़ चरित्रवाली महिला थी । नागर्जुन के गाँव में संस्कृत अध्ययन की परंपरा थी । उस समय संस्कृत का ज्ञान की सबसे बड़ा ज्ञान था, और है यह मान्यता गोकुल मिश्र जैसे अशिक्षितों में भी उस समय थी । अतः संस्कृत पाठशाला में प्राचीन पद्धति से शिक्षा शुरू हुई नागर्जुन की ।

तेरह उम्र के आस-पास प्रथमा की परीक्षा देकर गाँव के की पंडित अनिरुद्ध मिश्र से संस्कृत के कुछ छंदों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया । प्रथमा केबाद गनौली फिर पचगा किया और जा पहुँचे बनारस संस्कृत में ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु । वहीं शिक्षा ग्रहण क्रम में प्रख्यात मैथिली रचनाकार कविवर पंडित सीताराम से परिचय प्राप्त हुआ और उनसे भाषा, छंद, अलंकार आदि का विशेष ज्ञान प्राप्त किया ।

बनारस में ही संस्कृत के साथ-साथ मैथिली में रचना

करने लगे । वहीं रहते हुए सामाजिक और राजनैतिक विषयोंपर सोचने का सिलसिला भी शुरू हुआ । फिर बनारस की पढाई छोड़ बौद्ध दर्शन में विशेष रस प्राप्त करने के लिए भारत के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए सन १९३६ में लंका के विख्यात बौद्ध शिक्षण विद्यालंकार परिवेश जा पहुँचे । वहीं नागर्जुन नाम से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली ।

कविता और छोटे-छोटे निबंध यात्रा प्रसंग लिखते ही रहते थे । सन १९३१ से की पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे । फिर १९४३ से बँगला और गुजराती के उपन्यासों के अनुवाद में अपने को लगाया । सन १९४६ में 'पारो' नामक मैथिली में चौदह उपन्यास छप चुके हैं ।

हिन्दी में पहला उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' १९४८ में छपा । १९५२ में 'बलचनमा' नामक उपन्यास का प्रकाशन हुआ । प्रेमचंद के 'गोदान' के बाद नागर्जुन का 'बलचनमा' उपन्यास भारतीय किसानों में जागती हुई चेतना का संवाहक है । अपने हक्कों को लडाई के लिए प्रतिबद्ध और क्रांतिकारी चेतना के कारण बलचनमा ने हिन्दी कथा पात्रों में महत्वपूर्ण दर्जा पा लिया ।

सन १९६९ के लिए मैथिली का साहित्य अकादमी पुरस्कार 'पत्रहीन नगन गाछ' नामक काव्य संग्रह पर इन्हें मिला । १९८१ में उत्तर प्रदेश शासन की ओर से दीर्घकालीन साहित्य रचना और हिन्दी सेवा के लिए विशिष्ट सम्मान दिया गया । १९८६ में उत्तर प्रदेश द्वारा ही साहित्य का सर्वोच्च सम्मान 'मैथिली शरण गुप्त सम्मान' दिया गया ।

रतिनाथ की चाची, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुम्भीपाक, हरिक जयंती, उग्रतारा, जमानिया का बाबा, पारो, गरीबदास आदि हिन्दी उपन्यास और नवातुरिया, बलचनमा आदि मैथिली उपन्यासकार को मेरा कोटि कोटि प्रणाम !



## नोटबंदी : क्या याया क्या खोया ?

८ नवम्बर की रात अचानक प्रधानमंत्री मोदी ने ५०० और १००० रुपये के मौजूदा नोटों को बंद करने का ऐलान कर दिया। इस फैसले पर समीक्षा बैठक हुई। सुत्रों का मानना है कि इस फैसले से गरीब, मध्यम वर्ग और नौकरी पेशा लोगों को फायदा होगा। इसके चलते रोयल एस्टेट में कीमतें कम होंगी और उच्च शिक्षा भी आम लोगों के दायरे में होंगी। जानकारों ने बताया कि इस फैसले से सरकार के रेवेन्यू में इजाफा होगा। इस फैसले से ब्लैकमनी व्हाईट मनी के दायरे में आने में भी मदद मिलेगी। उन्होंने इन नोटों को बैंकों और पोस्ट ऑफिसों में जमा करवाने और एक्सचेंच करने की आखिरी तारीख ३० दिसंबर तय की थी। अमान्य करार दिए गए। कुल ८६ फीसदी यानी १५.५ लाख करोड़ नोट सर्वुलेशन में थे। नोटों को जमा करवाने की आखिरी तारीख नजदीक आने के बीच ब्लूमर्बर्ग को सुत्रों ने बताया था कि बैंकों में १५ लाख करोड़ रुपए डिपॉजिट हो चुके हैं।

नोट बंद होने से भारी अफरातफरी के बाद सरकार भावनात्मक और रक्षात्मक है। संसद की बहसे हमेशा की तरह तथ्यहीन है। जब हि यह एक आर्थिक फैसला है इसलिए तथ्यों में नापना जरूरी है। बयान वजियों से अलग, अपना ही पैसा निकालने के लिए लाइन में लगकर मौत को गले लगाते बदहवास लोगों को यह समझ में आना चाहिए, कि विशाल मौद्रिक बदलाव के फायदे और नुकसान क्या हो सकते हैं।

१) तमाम स्वतंत्र एजेंसियों के अनुसार तकरीबन २० फीसदी काला धन नकदी में है जब कि बाकी जमीन-जायदाद और जेवर-गहनों की शक्ति में रखा गया है। हालांकि काली नगदी और कम भी हो सकती है।

२) बड़े नोटों का बंद होना केवल उन लोगों को नुकसान पहुँचाना है, जिन्होंने इस फैसले के बक्त अपनी काली कमाई नकदी की शक्ति में जमा कर रखी थी।

३) देश में जितनी मुद्रा चलन में थी, उसका ८० फीसदी हिस्सा अब बेकार हो चुका है। भारत का ज्यादातर व्यापार और खर्च बड़े नोटों में की होता है। इस लिए नोटों को बदलने के लिए बैंकों या दूसरे विनियम केंद्रों पर आना होगा।

४) भारत की ११.८ फीसदी अर्थव्यवस्था नकदी के सहारे चलती



संकलन - फोंडके वैष्णवी विजय वैजयंती तृतीय वर्ष कला

है। भारत के जीडीपी में नकदी का अनुपात कमोबेश कई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बराबर है।

५) नकद अर्थव्यवस्था में काले और सफेद लेन देन का जटिल घालमेल है। गैरकानूनी तरीकों से कमाई गई नकदी का इस्तेमाल भी उत्पादक संपत्तियाँ और माँग पैदा करने के लिए भी किया जाता है। इसलिए नकद अर्थव्यवस्था दूसरी तरह से समझते हैं। नकद अर्थव्यवस्था में दो किस्म की नकदी होती है। एक अकाउंटेड या घोषित और दूसरी अनअकाउंटेड। नियमों के तहत दो ही खाते अधिकृत हैं। नकदी केवल तभी कानूनी बन सकती है जब या तो टैक्स खाते में उसका लेखाजोखा हो या बैंक खाते में जो भी नकदी इन दोनों खातों से बाहर है उसे अनअकाउंटेड कहें।

६) काले धन की अर्थव्यवस्था के आकार के बारे में चाहे जो अनुमान हो, लेकिन जहाँ तक नकद अर्थव्यवस्था की बात है, इसे भारतीय रिजर्व बैंक हरेक तिमाही में अच्छी तरह से मापता और दर्ज करता है। क्योंकि आरबी आई छापे गए हरेक करेंसी नोट का रिकार्ड रखता है। इसलिए मनी इन सर्वुलेशन का आँकड़ा नकद अर्थव्यवस्था की गणना है।

### फायदों का हिसाब -

लगभग दस-ग्यारह दिन के दर्द के बाद देश यह जानने को बेचैन है कि इस कुर्बानी के फायदे आखिर क्या होने वाले हैं। नकद अर्थव्यवस्था के कुछ आँकड़ों से फेंट कर संभावित फायदों का अंदाज लगाया जा सकता है।

रिजर्व बैंक के आँकड़ों के मुताबिक मार्च २०१६ तक भारत में ५०० और १००० के नोटों में करीब १४,१८० अरब रुपये की नकदी प्रचलन में थी। इसमें से ३० फीसदी यानी ४,२५४ अरब रुपये बैंकों और दूसरी सरकारी एजेंसियों के पास थी, जब कि ७० फिसदी यानी ९,९२६ अरब रुपये आम जनता (मनी बिद पब्लिक) के पास थे। यह लेख लिखे जाने तक करीब ६ लाख करोड़ रुपये बैंकों के पास जमा हो चुके थे। पुरे अभियान की सफलता इस बाद पर निर्भर है कि बड़े नोट बंद होने के बाद कितनी नकदी अदला-बदली के लिए वापस आएगी और कितनी नकदी व्यवस्था से गायब हो सकती है।



## मानवता

संकलन - अक्षता अनंत अशिवनी नेवरेकर  
तृतीय वर्ष कला

आज मानव के पास क्या कुछ नहीं है। धन-दौलत, सोना-चांदी, घोड़ा-गाड़ी शोहरत हर चीज जो वो चाहता है, उसे वह प्राप्त करता है। कमी है तो केवल मानवता की। सत्य तो यह है कि आज इन्सान अपनी इन्सानियत खो बैठा है। इन्सानों में दया, प्रेम, सहयोग और दूसरों की सेवा करने की भावना समाप्त होती जा रही है। उसका स्थान वैर, विरोध, ईर्ष्या ने लिया। आज इन्सान इन्सान से डर रहा है, इन्सान ही इन्सान का दुश्मन बना हुआ है। ईमान खत्म को चुका है और इन्सानियत नाम की चीज कम होती जा रही है।

मानव की कीमत भी आज चन्द सिक्कों के सिवा कुछ नहीं रही। पैसा ही सब कुछ हो गया है। यहाँ ईमान तक बिकते देखा है। ऐसे मानव से तो पशु कहीं बेहतर है, जो किसी सभ्यता को नहीं मानते, फिर भी हम से ज्यादा सभ्य है। मानव जिसके पास सोचने समझने की शक्ति है, वह इस शक्ति का प्रयोग एक-दूसरे को हानि पहुँचाने में करता है। इसीलिए मन बेचैन रहता है। और शान्ति नहीं मिलती। जरा सी आहट पर मानव डर कर उठ बैठता है। क्योंकि इन्सान हैवान बन चुका है। उसे कोमल भावनाओं की कद्र नहीं रही। आज मानव की कीमत ही क्या रह गई है? प्रति दिन समाचार पत्रों में देखते हैं, पढ़ते हैं कि किस प्रकार लोगों की जांने जा रही हैं। हत्याओं का सिलसिला देखकर लगता है कि हमारे देश में हर दिन खून से छपकर ही समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। इसका एक ही कारण है, इन्सान इन्सान न रहकर हैवान बनता जा रहा है। इन्सानियत या मानवता के सारे गुण समाप्त होते जा रहे हैं।

न वो दोस्त है, न हमदम, न महफिलें रहीं,  
कभी काश लौट आए वो गुजरा हुआ जमाना।

आज दिखाने के लिए तो चेहरे पर मुस्कुराहट होगी  
परंतु मन में नफरत छिपी होगी। मुँह पर स्तुति करेंगे परंतु पीठ

पीछे निन्दा। 'मुँह में राम बगल में छुरी वाली' कहावत सच हो चुकी है।

आज पालतू जानवर पर यकिन किया जा सकता है। परंतु आदमी पर नहीं। हर कोई एक दुसरे से स्वार्थवश जुड़ा होता है। सच्ची हमदर्दी तो अब ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलती। मानव कितना बदल गया है, वह दूसरों के होठों पर मुस्कुराहट नहीं आँखों में आँसू देखना चाहता है।

ईश्वर ने जब मानव की रचना की जो उसमें कोमल भावनाएँ भरी, प्यार और अपनेपन का अहसास भरा जिससे इन्सान को हर खुशी मिलें। वह इस धरती पर आकर पा सकता है। धीरे-धीरे इन्सान के मन में लालच पैदा होने लगा। अधिक पाने की चाहत में प्रयास करने लगा। इसी लालच ने सुख चैन छीन लिया। पहले हर एक के दुःख दर्द में शामिल होना इन्सान अपना कर्तव्य समझता था। किसी के घर दुर्घटना होती थी तो सारा गांव, प्रत्येक व्यक्ति, गम में शामिल होते थे। परंतु आज कितनी मौते होती हैं किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। दिलों में प्यार समाप्त हो रहा है। आज दूसरों के अच्छे गुणों की तलाश है अवगुण ढूँढ़ कर अपना समय न खराब करें।

हो सके तो स्वयं को इतना योग्य बना लें, कि लोग आप पर विश्वास करें। हमारा दिया हुआ वचन कभी न टूटे। ऐसे इन्सान जीवन में कभी असफल नहीं होते क्योंकि जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल उन्हें मिलता है। हम मानवता वाले अच्छे कर्म करते चले जाएँ। मन की संकीर्णताओं को छोड़ दे। यदि आपका मन सुंदर है तो आपको सामनेवाले का मन भी सुंदर ही दिखाई देगा। इस संसारिक यात्रा को प्रेम एवं शांतिपूर्वक तय करने में ही सबका भला है। जिनके मन में दया, प्रेम, त्याग और शांति का ज्ञान है वह दूसरों को भी ऐसी शिक्षा दे और उनके मन में प्रेम और सहनशीलता को शिक्षा दे। एक



रौप्य महोत्सवी वर्ष

## बैषाक्षर्या पृष्ठा २०१६-१७



चंदन का पेड़ बहुत मूल्यवान माना जाता है। उसके आसपास जितने भी पेड़ होते हैं वे सभी पेड़ चंदन की सुगंधी में रंग जाते हैं। उन सभी पेड़ों में से चंदन की ही खूशबू आने लगती है।

अतः यह निर्णय अब हमारे हाथ में है कि किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना है। जिससे हम अच्छे इन्सान और अच्छे नागरिक बन पायेंगे। कभी किसी का दिल न दुखाएँ और किसी को धोखा न दे। कभी भी चोरी न करें अपनी मेहनत की कमाई ही बहुत होती है। चोरी या भ्रष्टाचार द्वारा प्राप्त धन फिर चाहे वो एक रुपया हो अथवा लाखों रुपये क्यों न हो आपको आनंद नहीं देगा।

हमे सभी से मधुर वाणी में प्रेमपूर्वक बोलना चाहिए। इसीसे हम दूसरों का दिल जीत सकते हैं। किसी ने कहा है...

“फरिश्तों से बेहतर है इन्सान बनना,  
मगर इस पे लगती है मेहनत ज्यादा”

यदि हम वास्तव में मानवता वाले गुण ग्रहण कर लें तो यह जीवन ही मधूर हो जाएगा। जिसके मन में भय है वह समाप्त हो जाएगा। हमें अपने भविष्य को सुखद बनाने के लिए कोशिश तो करनी ही होगी। किसी ने बहुत बड़ी बात कही है।

“या रब बना दे ऐसी पाक मेरी जिन्दगी।  
होते हैं पाक जैसी तेरी आरती के फूल।”

हम सभी यह मानते हैं कि यदि मानव सुखी हो सकता है तो केवल प्रेम से। मानवता के धर्म से। इन्सानित के प्रेम से। यदि हमारे मन में प्रेम बस जाए तो हम चलते फिरते पूजा स्थल बन जाएँगे क्योंकि जिसका मन पवित्र है व पूज्य है।

“औरों को हँसते देखो मनु,  
हँसो और सुख पाओ।  
अपने सुख को विस्तृत कर लो,  
सब को सुखी बनाओ।”

‘विश्वास’ एक छोटा शब्द है, उसको पढ़ने को तो एक सेकंद लगता है, सोचो तो मिनट लगता है, समझो तो दिन लगता है, पर साबित करने में तो जिंदगी लगती है।

अपने जीवन को बदलने के लिए आपको केवल एक व्यक्ति की आवश्यकता होती है, वह है आप खुद।

जीवन का रहस्य केवल आनंद नहीं है बल्कि अनुभव के माध्यम से सीखना है।

जितना छोटा हमारी सोच का दायरा होगा, उतना ही छोटा हमारी वास्तविक सफलता का दायरा होगा

जिंदगी में जोखिम उठाना जरुरी है। जीतने पर आप नेतृत्व कर सकते हैं, हारने की सूरत में दूसरों को दिशा दिखा सकते हैं।

एक अच्छे चरित्र का निर्माण हजारों बार ठोकर खाने के बाद होता है।



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैशाख रात्रि २०१६-१७**



## काव्य विभाग



### जिंदगी के ख्याँब

युँ जिंदगी के ख्याँब दिखा दिया गया कोई  
मुस्कुरा के अपना बना गया कोई ।  
बहती हुई हवाओं को युँ थाम ले गया कोई,  
सावन में आके कोयल का गीत सुना गया कोई ।  
युँ अपने प्यार की हवासे गम को मिटा गया कोई,  
मीठे सपनों में आके अपना बना गया कोई ।  
धूल लगी, किताब के पन्ने पलट गया कोई ।  
उसमें सूखे हुए गुलाब की याद दिला गया कोई ।  
युँ जिंदगी में फिर से प्यार की बरसात दे गया कोई,  
बिन आहट के इस दिल में जगह बना गया कोई ।  
युँ फिर से मुझे जीने का मकसद सिखा गया कोई,  
बिन आहट अपना बना गया कोई ।

ऐ जिंदगी तेरा सफर भी बहुत निराला है ....  
कभी खुशियाँ भर-भर के देता है,  
तो कभी गम के आँसु रुलाता है ।  
कभी छप्पर फाड के देता है,  
तो कभी बेवजह संघर्ष कराता है ।  
ऐ जिंदगी तेरा सफर भी बहुत निराला है ....  
कभी मौत का दावत ले के आता है,  
तो कभी मुँह से ले के आता है ।  
ऐ जिंदगी तेरा सफर भी बहुत निराला है,  
शायद, इसलिए ऐ जिंदगी तेरा सफर भी बहुत निराला है ।  
संकलन - शेळके महेंद्र मनोहर मनिषा  
तृतीय वर्ष कला



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैषाव्राणा २०१६-१७**



## जिंदगी

जिंदगी एक फूल है,  
जो सदा महकता है ।  
जिंदगी एक सरिता है,  
जो सदा बहती रहती है ।  
जिंदगी भगवान है,  
जो सदा पवित्र है ।  
जिंदगी तो एक खेल है यारों,  
जिसमें सदा हार-जीत होता है ।  
इसलिए शायर कहते हैं ....

जिंदगी एक हसीन ख्याँब है, जिसमें जीने की चाहत  
होनी चाहिए,  
गम खुद की खुशी में बदल जाएँगे, सिर्फ मुस्कुराने  
की आदत होनी चाहिए ।

अगर धन-दौलत, रूपया-पैसा ही खुशहाल होने का सीक्रेट  
होता तो अमीर लोग नाचते दिखाई पड़ते । अगर पॉवर  
मिलने से सुरक्षा आ जाती जो नेता अधिकारी बिना  
सिक्युरिटी के नजर आते । परंतु जो सामान्य जीवन जीते हैं,  
वे चैन की नींद सोते हैं । इसलिए दोस्तों यह जिंदगी सभी  
के लिए खुबसूरत है, इसको जी भर के जियो । इसका  
भरपूर लुत्फ उठाओ । क्योंकि-जिंदगी ना मिलेगी दोबारा ।  
सामान्य जीवन के लिए,  
विनम्रता से चले और ईमानदारीपूर्वक प्यार करें ।  
स्वर्ग यही है ।

एक ट्रक के पीछे एक बड़ी अच्छी बात लिखी देखी ....  
जिंदगी एक सफर है,  
आराम से चलते रहो ।  
उतार चढाव तो आते रहेंगे,  
बस गियर बदलते रहो ।  
सफर का मजा लेना हो तो,  
साथ में सामान कम रखिए ।  
और  
जिंदगी का मजा लेना हो तो,  
दिल में अरमान कम रखिए ।  
संकलन - जंगम रसिका रघुनाथ रेशमा  
प्रथम वर्ष कला

## कोरे कागज

इस कोरे कागज पर,  
कोई तो लिख दो उसपर,  
भावनाएँ और विचार, मिल जाएगी राहत मुझे ।

इस कोरे कागज पर,  
कोई तो तस्वीर बनाएँ  
जिसे देखकर, मन प्रसन्न हो जाएगा मेरा ।

इस कोरे कागज पर,  
कोई तो लकीर खींचे, लकीरों को पढ़कर,  
मेरा भविष्य बनेगा, मेरी जिंदगी मेरे सपने पूरे होंगे ।

संकलन - नेवरेकर अंकिता अनंत अश्विनी  
प्रथम वर्ष कला



## देश के बापू

वैष्णव जन तो तेने कहिए

गाकर पीड़ा भोगी,

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम

भजकर हुआ वियोगी ।

कुछ कहते हैं गांधी

कुछ कहते हैं देश की आत्मा,

साबरमती का संत और

बापू से बन गया वह महात्मा ।

सत्य अहिंसा की मूरत वह

चरखा खादी वाला,

आजादी के रंग में

उसने जग को रंग डाला ।

संकलन - कु. पाटील निवेदिता नारायण नमिता  
द्वितीय वर्ष वाणिज्य



## आज का युवा

आज का युवा लगता कितना व्यस्त है,  
ना पढ़ाई के लिए वक्त है,  
ना भविष्य के प्रति सक्त है,  
शराब कोकीन का रक्त है,  
और कामदेव का भक्त है।  
  
आज का युवा आडंबर का ज्ञाता है,  
ओम कहने से कतराता है,  
कांस पहनकर इतराता है,  
गले में शाहरूख सलमान की चैन है,  
और ऐश्वर्या का फैन है।  
  
आज का युवा इतना अंध कि,  
गांधी को देता गालियाँ,  
मल्लिका को देता तालियाँ,  
जिनके चरित्र में इतना फर्क,  
कहाँ से आएगा उसमें तर्क।  
  
अरे, आज का युवा, पहचानों सच को ...  
ऐसा फैशन ये सब आँखों का भ्रम है,  
सब खोखले हैं इनमें ना दम है,  
संस्कार संस्कृति और आत्मसम्मान यही तुम्हारा करम है,  
बढ़ो आगे, बढ़ो देश की आन यही तुम्हारा धरम है।

संकलन - मोहिते शर्मिला भास्कर सुनिता  
तृतीय वर्ष कला

## हिन्दी परम उदार

दूर-दूर तक विश्व में रही प्रेम-रस घोल,  
हिन्दी हिंदुस्तान की भाषा है अनमोल।  
बहु भाषाओं से जुड़े हिन्दी के उर-तार,  
सभी जनों के हेतु हैं हिन्दी परम उदार।  
करता है वह राष्ट्र की गौरवमय उत्थान,  
एक राष्ट्रभाषा रहे जिसकी धूव पहचान।  
निज भाषा-संस्कृत बिना, बिना लोकसाहित्य,  
राष्ट्र नहीं रहता यथा दिवस बिना आदित्य।  
हिन्दी ही इस देश का स्वाभिमान सर्वस्व,  
कंप्युटर पर भी बढ़ा हिन्दी का वर्चस्व।  
सच्ची उन्नति देश की है, हिन्दी के हाथ,  
राष्ट्र एकता हित सभी दें हिन्दी का साथ।  
निज भाषा साहित्य और संस्कृति से यदि प्यार,  
राष्ट्रभाषा सच्ची वही वह ही विमल विचार।  
कौरव बुद्धि विधान से जन को रोख क्लेश,  
अमल राष्ट्र गौरव बिना दीप्त न होता देश।  
उस समाज, उस देश का कौन करें कल्याण?  
भाषा संस्कृति का वह जो स्वयं कर सके प्राण।  
नहीं हिन्दी में ही खिले यदि हिन्दी के फूल,  
तो समझो इस देश की सारी उन्नति धूल।

संकलन - पांचाल माधुरी संतोष संगीता  
द्वितीय वर्ष कला





रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैषाव्राणा २०१६-१७**

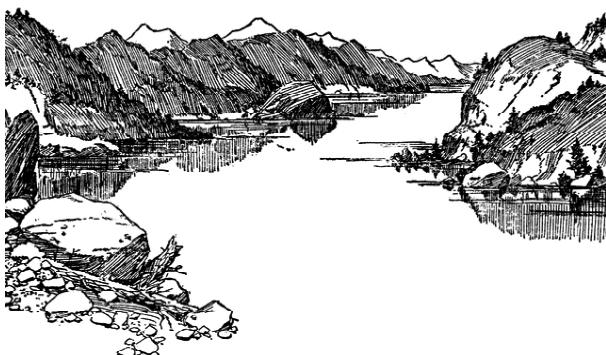


## सावित्री की गोद में

जल

आसमान से बारिश बरस रही थी,  
हवा तेज होती जा रही थी ।  
बज गई घंटी देखकर घड़ी,  
मुंबई की ओर बस निकल पड़ी ।  
हर कोई हरियाली मन में समाने लगा,  
देखते देखते अंधेरा होने लगा ।  
घड़ी का कॉटा रात में ग्यारह पर गया,  
इतने में सावित्री नदी का पुल आ गया ।  
शायद की पुल पहले से गीरा हुआ था,  
बस को बुलानेवाला पुल टूटा हुआ था ।  
धड़ाम के साथ बस गिर गयी नदी में,  
यह हुआ था घनघोर अंधेरी सदी में ।  
बस के हजार टुकडे टुकडे हो गए,  
यात्रियों के सपने चूर-चूर हो गए ।  
मन में यात्रियों के असंख्य सवाल,  
अब परिवार के लिए कौन हवाल ?  
झूबते झूबते मृत्यु से लड़ते रहे,  
असंख्य नाकाम कोशिश करते रहे ।  
शरीर को थकान ने जकड़ लिया,  
एक एक को भगवान ने पकड़ लिया ।  
निकल पड़े थे सब अपने कामों की सोच में,  
आखिर चिल्लाते चिल्लाते समा गए सावित्री की गोद में ।

तांबे अजिंक्य बाल्कृष्ण अनुराधा  
द्वितीय वर्ष कला



जल, जल है,  
पर जल का नाम बदल जाता है ।  
हिम नग से झरने,  
झरनों से नदियाँ,  
नदियों से सागर  
तक चल कर  
कितना भी आकाश उडे  
गिरे, बहे, सूखे  
पर भेस बदल कर  
नाम बदल कर  
पानी, पानी ही रहता है ।  
श्रम का सीकर  
दुख का आँसू  
हँसती आँखों में सपने, जल !  
कितने जाल डाल मछुआरे  
पानी से जीवन छीनेंगे ?  
कितने सूरज लू बरसाकर  
नदियों के तन-मन सोखेंगे ?  
उन्हें स्वयं ही  
पिघले हिम के  
जल-प्लावन में घिरना होगा  
फिर-फिर जल के  
घाट-घाट पर  
ठाट-बाट तज इत्रना होगा,  
महाप्रलय में  
एक नाम ही शेष रहेगा,  
जल...जल... जल... ही जल

संकलन - इस्वलकर नम्रता चंद्रकांत प्रियांका  
द्वितीय वर्ष वाणिज्य



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैष्णवराजा** २०१६-१७



## समझदारी की बात

किसी ने पूछा कि,  
उम्र और जिंदगी में क्या फर्क है ?  
बहुत सुंदर जवाब ...  
जो अपनों के बिना बीती वह है - उम्र ।  
और जो अपनों के साथ बीती वह है - जिंदगी ।  
हर चीज वहाँ मिल जाती है,  
जहाँ वह खोयी हो ।  
विश्वास वहाँ कभी नहीं मिलता,  
जहाँ एक बार खो जाता है ।

संकलन - रावराणे प्रणाली गजानन गिरांजली  
तृतीय वर्ष कला

## जीवन

जीवन एक अंधेरी रात है,  
जिसमें दुखों की बरसात है ।  
हर किसी को सुख की खैरात है,  
पर यह तो केवल सपनों की खैरात है ॥ १ ॥  
जीवन एक फुटबॉल है,  
यह तो दुख की बात है ।  
जिसमें हर किसी का अपना अपना रोल है,  
पर मेरा रोल तो डॉँवाडोल है ॥ २ ॥  
जीवन एक खिलौना है,  
सच पूछे तो यह बहुत रुलौना है ।  
लेकिन किसी किसी के लिए शायद यह सलौना है,  
पर मेरे लिए तो केवल सपनों का एक बिछौना है ॥ ३ ॥

जीवन सपनों का चोला है,  
यह दुखों का एक बड़ा गोला है ।  
आहें और कराहें का ओला है,  
शायद दुख-दर्द से भरा शोला है ॥ ४ ॥  
जीवन एक अनकही कहानी है,  
दुख-दर्द की एक रवानी है ।  
मन के लिए सुख-दुख तो आती जाती है,  
पर मेरे लिए तो सुख समझो बात सदियों पुरानी है ॥ ५ ॥  
जीवन एक कडवी सच्चाई है,  
जीवन घोर दुर्भाई है ।  
शायद फेंकी हुई माचिस की सलाई है,  
इसीलिए तो मेरी जीवन से रुदवाई है ॥ ६ ॥

## अतिरिक्त

अतिरिक्त कुछ दीजिए,  
इस रिक्त हृदय के लिए ।  
असत्य प्रेम ही मिला,  
अब तक परिणय के लिए ।  
विरह हो गर तुम,  
विरह ही उडान दो ।  
धरती से उठाओ और,  
मुझको आसमान दो ।  
उत्थान से मेरा कभी,  
तुम्हारा युग बने ।  
तुम्हारी कहानी आए,  
मेरे विषय के लिए  
अतिरिक्त कुछ दीजिए,  
इस रिक्त हृदय के लिए ।

संकलन - पाटील अशोक शांताराम सुनंदा  
तृतीय वर्ष कला

संकलन - जाधव सोनल आबु सुगंधा  
तृतीय वर्ष वाणिज्य



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैशाख रात्रि २०१६-१७**



## आप विशेष हो ...

- |                         |  |
|-------------------------|--|
| आप सजग हैं ....         | जब आप निराशा में आशा की किरण जगाते हैं।                      |
| आप सत्यशील हैं ....     | जब आप स्वीकार करते हैं कि मुझसे यह गलती हुई है।              |
| आप प्रगतशील हैं ...     | जब आप अपने लक्ष्य और उसे पाने के लक्षण में कम अंतर पाते हैं। |
| आप विचारशील हैं ...     | जब आप चिंता को छोड़ नित्य शुभ चिंतन करते हैं।                |
| आप क्षमाशील हैं ...     | जब आप दूसरों की भूलों को भूल जाते हैं।                       |
| आप शक्तिशाली हैं ...    | जब आप हर परिस्थिती में अचल रह सदा मुस्कुराते हैं।            |
| आप सन्माननीय हैं ....   | जब आप दूसरों के सम्मान में ही अपना सम्मान समझते हैं।         |
| आप प्रेमस्वरूप हैं .... | जब आप अपने दुख का भूल औरों को खुशी बाँटते हैं।               |
| आप उदारचित्त हैं ....   | जब आप अपनी खुशी का इजहार दूसरों को बाँट कर करते हैं।         |
| आप विनम्र हैं ....      | जब अपने आप को पता न हो कि हम कितने नम्रचित्त हैं।            |
| आप बुधिमान हैं ....     | जब आप अपनी कमियों को जान उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। |
| आप सौंदर्यवान हैं ....  | जब आप स्वयं को सदा अपने मन रूपी दर्पण में ही देखते हैं।      |
| आप धनवान हैं ....       | जब आप में अच्छा बनने के सिवाय और कोई इच्छा नहीं है।          |
| आप स्वतंत्र हैं ....    | जब आप अपने व दूसरों के प्रति नकारात्मक भावों से मुक्त हैं।   |
| आप महावीर हैं ...       | जब आप निर्भय बन नित्य नव निर्माण का साहस रखते हैं।           |
| आप खुशनसीब हैं ....     | जब आप अपनी विशेषताओं को विश्वकल्याण का अर्थ लगाते हैं।       |

संकलन - वारीक संतोष हनुमंत हेमलता  
तृतीय वर्ष वाणिज्य





रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैशाख रात्रि २०१६-१७**



## जरूरत

साँसों को जरूरत होती है, हवा की नहीं,  
बल्कि वो दिखने की ....  
जिंदगी को जरूरत होती है, जल की नहीं,  
बल्कि उसके स्वाद की ....  
प्यार को जरूरत होती है, अस्तित्व की नहीं,  
बल्कि उसे बार-बार मिलने की ...  
प्यार तो ऐसा ही होना चाहिए,  
बल्कि उसकी जरूरत ही न पड़े,  
उसे बार-बार मिलने की ....  
वो नशा बन जाए,  
हर वक्त जीने की .....



संकलन - यादव रीना मिलिंद मीनाक्षी  
प्रथम वर्ष कला

## सामने गुलशन नजर आया

सामने गुलशन नजर आया,  
गीत भँवरे ने मधुर गाया ।  
फूल के संग मिले काँटे भी,  
जिंदगी को यही फरमाया ।  
उनकी महफिल में कदम मेरा,  
मैं बड़ी गुस्ताखी कर आया ।  
आँख में भर कर उसे देखा,  
फिर रहा हूँ तब से भरमाया ।  
चोट ऐसी वक्त ने मारी,  
गीत होठों ने मधुर गाया ।  
धुंध ऐसी सुबह को छाई,  
शाम का मंजर नजर आया ।  
आँख टेढ़ी जब हुई उन की,  
जिंदगी ने बस कहर ढाया ।

संकलन - मोरे निकिता मनोहर मनिषा  
तृतीय वर्ष कला

## समय नहीं रुकता

हर कोई प्रतिक्षा करता है, जो समय इंतजार नहीं करता है भाई ।  
चुका हुआ समय कभी वापस नहीं आता है भाई,  
जो समय को बरबाद करते हैं, उनका जीवन होता है दुखदाई ।  
जो छात्र इसे चुक जाते हैं,  
वे बहुत पछताते हैं भाई ।  
जो कृषक इसे चुक जाते हैं,  
वे भूखों मरते हैं भाई ।  
जो इसे नहीं चुकते,  
वे ही खुश होते हैं भाई ।  
जो नरपति इसे चुक जाते हैं,  
वे भीखमंगे होते हैं भाई ।  
समय का उपयोग करनेवाले,  
कमाल कर जाते हैं भाई ।  
जो गरीब इसका उपयोग करते हैं,  
वे अमीर खान बन जाते हैं भाई ।  
जो छात्र इसको नहीं चुकते हैं,  
वे सफलता की नई कहानी लिखते हैं भाई ।  
जिनको जीवन की रीत पता है,  
वे अपना समय नहीं गँवाते हैं भाई ।  
इसलिए ... याद रखो ...  
हर कोई प्रतिक्षा करता है, पर समय इंतजार नहीं करता है भाई ।

संकलन - धुरी राखी राजेंद्र रेशमा  
तृतीय वर्ष कला



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैषावराणी २०१६-१७**



## अब और याने की हसरत नहीं



### मेरी मंझिल

गीत की जरुरत महफिल में होती है,  
प्यार की जरुरत दिल में होती है ।  
बिना दोस्त की अधुरी है जिंदगी, क्योंकि  
दोस्ती की जरुरत हरपल में होती है ।  
दोस्ती में अहसास होता है,  
दोस्ती का रिश्ता कुछ खास होता है ।  
हर बात को जुबाँ से कहना मुमकिन नहीं,  
इसलिए दोस्ती का नाम विश्वास होता है ।  
आसमा के तारों को गिना नहीं जाता,  
हर एक अरमानों को मिटाया नहीं जाता ।  
दोस्त तो बहुत बनते हैं, मगर  
हर एक को आपकी तरह दिल में बसाया नहीं जाता ।  
एक फूल भी अक्सर बाग सजा देता है,  
एक सितारा भी संसार चमका देता है ।  
जहाँ दुनिया भरके रिश्ते काम नहीं आते,  
वहाँ एक दोस्त जिंदगी बना देते हैं ।

संकलन - तळेकर अश्विनी शांताराम संगीता  
तृतीय वर्ष कला

अब और मंझिल पाने की हसरत नहीं,  
किसी की याद में मर जाने की फितरत नहीं ।  
आप जैसे दोस्त जबसे मिले,  
किसी और को दोस्त बनाने की जरुरत नहीं ।  
कुछ दोस्त पलभर में भुला दिए जाते हैं,  
कुछ दोस्त पल-पल याद आते हैं ।  
हम आपसे यही पूछना चाहते हैं कि,  
दोस्तों की इस कतार में हम कहाँ आते हैं ।  
हर यादों में उसी की याद रहती है,  
मेरी आँखों को उसी की तलाश रहती है ।  
कुछ तुम भी दुआ करो यारों,  
सुना है दोस्तों की दुआ में फरिश्तों की फरियाद होती है ।  
थोड़ा सोचा है हमने, थोड़ा जाना है हमने,  
मुश्लिक से मगर पहचाना है हमने ।  
कोई आप जैसा था, ना होगा,  
इसलिए दोस्त आपको माना है हमने ।  
लमहे ये सुहाने साथ हो ना हो,  
कल में आज जैसी बात हो ना हो  
आपकी दोस्ती हमेशा इस दिल में रहेगी,  
चाहे कभी मुलाकात हो ना हो ।  
इतनी दोस्ती ना करो की बिंगड जाएँ हम,  
थोड़ा डाँटा भी करो कि सुधर जाएँ हम ।  
हो जाए अगर हमसे कोई खता तो हो जाना खफा,  
मगर इतना भी नहीं कि मर जाएँ हम ।

- पांचाल नम्रता नंदकुमार नलिनी  
प्रथम वर्ष कला



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैषाक्षर्या पा २०१६-१७**



## गजलों की महफिल में वक्त तो लगता है

(गजल)



टूटे दिल को फिर जुड़ने में वक्त तो लगता है,

ठहरे पानी को बहने में वक्त तो लगता है ।

माली गुलशन को कितने ही क्यों न बदल डालो,

सूखा पौधा फिर खिलने में वक्त तो लगता है ।

कोई दूजी बातें होती तो कह देता यों,

उल्फत की बातें कहने में वक्त तो लगता है ।

कितनी भी क्यों ना हो शिद्दत तेरी मुहब्बत में,

उजड़ी दुनिया को बसने वक्त तो लगता है ।

दूबी साहिल पर कश्ती गर ऐसी कश्ती को,

फिर से दरिया पर चलने में वक्त तो लगता है ।

उँचा उड़ने की पहले से जिसको आदत हो,

छोटे पिंजरे में रहने वक्त तो लगता है ।

कैसे उससे मिल पाऊँगा इतनी जल्दी में,

खुद को खुद से भी मिलने में वक्त तो लगता है ।

संकलन - वारेसे प्रफुल्ल प्रविण प्रगती

द्वितीय वर्ष कला



संकलन - आंगवलकर निकिता अशोक शोभा  
प्रथम वर्ष कला

आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वैश्ववाडी



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**बैशाखरात्रा २०१६-१७**



## कुछ खास गजलें

वो यूँ ही मुझसे ना खफा होगा, मेरे दुश्मन ने कुछ कहा होगा ।

उसकी दहलीज पर झुका सर जब,

दिल ने माना यहाँ खुदा होगा ।

यूँ ही ना उसका खून गिरा होगा ।

कोई दिल का जखम हरा होगा ।

मुझको डर आज क्यों लगे हैं यूँ,

कोई तूफाँ वहाँ उठा होगा ।

अजनबी आया क्यों भला मिलने,

नाम मेरा कहीं सुना होगा ।

आँख से क्यों टपक रहे आँसू,

कोई दोस्ती निभा गया होगा ।

दास्ताँ पर मेरी बहुत रोया,

शख्स वो देख दिल जला होगा ।

दर्द वो भी मुझे खुदा देना,

उसके हिस्से में जो लिखा होगा ।

मेरे बारें में क्या भला कहता,

अपनी आँखे झुका खडा होगा ।

कौन लाएगा कौनसी सौगात, दर्द मुझको मिला नया होगा ।

मेरा दिल यूँ मचल रहा है क्यों, उसने चुपके से कुछ कहा होगा ।



संकलन - शिंगरे दीपक श्रीराम सविता  
द्वितीय वर्ष कला



रौप्य महोत्सवी वर्ष

द्वितीय वर्ष २०१६-१७



## - ENGLISH SECTION -



*"I can shake off everything, as I write ;  
my sorrows disappear , my courage is born."*

- Anne Frank

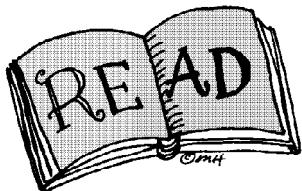


-: Section Editor :-  
Asst. Prof. Mrs. Vandana Kakade



रौप्य महोत्सवी वर्ष

वैश्वरी २०१६-१७

**INDEX**

Sr. No.	Article / Poem	Name of the Student
1.	What is Life	Vibhavari Raorane (T.Y.B.A. English)
2.	Role of Indian youth in National Development	Swati Narkar (T.Y.B.A. English)
3.	Status of women in India	Mahesh Gurav (T.Y.B.A. English)
4.	Women Empowerment	Megha Panhalkar (T.Y.B.A. English)
5.	Save the Baby Girl	Sujata Narkar (F.Y.B.A)
6.	Be the Best	Vibhavari kadam (T.Y.B.A. English)
7.	Mother Earth	Komal Gandhi (S.Y.B.A)
8.	Positive Thinking	Dipti Jadhav. (T.Y.B.A English)
9.	Save our Environment	Shehal parte ( T.Y.B.Com)
10.	Friendship	Dhanashri Sutar (T.Y.B.A. English)
11.	Struggling Life of a Single Mother	Samiksha Ghodke (S.Y.B.Sc)
12.	Chemistry Class	Ankita Rahate (T.Y.B.Sc)
13.	Think Positive	Jagruti Patankar (S.Y.B.Sc)
14.	Dad	Dnyanedkumar Jadhav. (S.Y.B.Sc)
15.	Easy and Difficult	Namrata Panchal (F.Y.B.A)
16.	Time	Ashlesha Yadav. (T.Y.B.Sc)
17.	Success	Siddhesh Panhalkar. (F.Y.B.Com)





रौप्य महोत्सवी वर्ष

**देशभ्रम** २०९६-१७



## WHAT IS LIFE

What is life ?  
 Life is a clock  
 Which starts when you are born  
 And stops when you die  
 It says to do something  
 What should you do  
 Some good or some bad  
 If you do some good work  
 You make the life clock immortal  
 If you do some bad work  
 Your life clock begins to weaken  
 Which pushes you to early death  
 That means you alone are responsible  
 The working of your life clock  
 so think well and decide what is Good or Bad ?

Compiled by - Vibhavari Raorane

T.Y.BA, English

*"I like the religion that teaches liberty, equality and fraternity."*

- Dr. B. R. Ambedkar

*Better three hours too soon than a minute too late.*

- William Shakespeare

*Excellence is a continuous process and not an accident.*

- A P J Abdul Kalam

*Education is the manifestation of perfection already in a man.*

- Swami Vivekanand



## **Role of Indian Youth in National Reconstruction**

- **Swati Narkar**

(T.Y.B.A English)

"Youth comes but once in a lifetime" said a distinguished fellow, and so it is. Hence it should be a period of life that we should use with responsibility in true spirit of enterprise & with the will to spend one's times and energy for the benefits of others.

When India was in the hands of British Rule, Gandhiji asked the youth of those days to come out of their shells and go to feed the poor and the affected people and to help them to become free from cruel work done by the British Rule. Today too, there is as much need for the youth in India to take this example of life.

It is said that 'Youth can reshape the world' Today nation is thrown in disorder and it is evident in every field of activity. The termites of corruption have eaten the faith in human. the violence is day by-day increasing to the greater heights. The destruction, due to violence have affected the youth at the most like smuggling, addiction of drugs etc. The great person like Baba Amte, Mother Teresa have dedicated their lives for the service of the poor people affected by various diseases like 'leprosy.' The youth should follow their footsteps in reconstruction of our 'Bharat'.

In poor country like India the goal of universal education is almost a perfect place of state. So the youth should take up this noble duty. Due to this they can spread their education knowledge in every small part of villages in small states. Each of educated youth should set himself the good of educating at least one illiterate person. As there are no clinics,

hospitals in the remote areas, the educated doctors should utilize their degrees and work for these poor people in remote areas.

The youth of our nation are the leaders and ambassadors of our national movement. They are the reservoir of strength. Youth are the life blood, builder of our society.;"Goethe rightly said , "The destiny of a nation at any given time demand on the opinions of its young men." Youth have a greater potential to bring change in any walks of life. They are the moulders of new society. They can give effective service to nation with different physical, spiritual,intellectual, patriotic dimensions. Our government and society should see the youth to be given sense of participation of deep involvement in any work, project and plan. Youth should be encouraged to take part in N.S.S / N.C.C & such organisation & must give military training. Only youth can eradicate corruption, other problems and nepotism from our land and stimulate the process of development.

Baren wrote "Young man are fitter to invent than to judge, fitter for execution than for counsel,fitter for news, prospects than for settled business". It is surely time for all youth in India to play their vital role in national building. They have lots of responsibilities to build the edifice of tomorrow's India. They should repeat the prayer number of times a day.

**"Good, better, best  
Lets us not rest,  
Till good becomes better  
And better would be the best"**



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**वैश्वराजिका** २०७६-७७

## Status Of Women in India

**Mahesh Gurav**  
(T.Y.B.A., English)

There has been a lot improvement in the status of women in India, after the independence. Gradually women are enjoying equality with the men in the society. Women have all the rights and privileges in every area as possessed by the men. The constitution of India has given equal rights, privileges and freedom that are enjoyed by the men for years. Even after so much exploitation women are now feeling much emancipated and free. Almost half area and population in India is covered by the women, so the development of the country depends upon the status of both the sexes. We can imagine the time when 50% of the population was not given equal opportunities and rights and even restricted to perform many activities in the society. Now-a-days women are getting top position in various fields of life such as some have been great political leaders, social reformers, entrepreneurs, business personalities, administrators etc.

The status of women in ancient India was quite high esteemed, however it got deteriorated with the passage of time and mentality of sati pratha, dowry system, female infanticide etc. became dominated and gave rise to the male dominated country. Great Indian leaders had worked a lot to raise the status of women

in the society. Because of their hard work these superstitions have been banned to great extent. Goverment of India has implemented various effective laws regarding safety and empowerment of the women in the Panchayati Raj system around 33% of the seats are reserved for women, thus women are being more conscious and came forward to fight for their rights.

Improvement in the status of women changes the social and economic status of the country. The status of women in the Indian society is much better than the women in the other developing countries. However, it is not enough to say that status of women have been completely improved in India. In such a competitive world Indian women are being well conscious about their rights and privileges in various fields. They are being more conscious about their professional career (socially, politically, economically and educationally) by following their all the responsibilities towards family.

Women are actively participating in the democratic processes which is quite more impressive. Women's participation in any area work is increasing day by day than men such as number of women



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**द्वारित्व** २०१६-१७



voters is increasing than men voters on the days of polling. Some of the great Indian women leaders, social reformers, social workers, administrators and literacy personalities who have changed the status of women a lot are Indira Gandhi, Vijay Lakshmi Pandit, Annie Basant, Mahadevi varma, Sucheta Kriplani, P.T. Usha, Amrita Pritam, Padmaja Naidu, Kalpana Chawla, Raj Kumari Amrit Kaur, Mother Teresa, Subhadra Kumari Chauhan etc. Women have started participating as daughters, sisters, wives, mothers, grandmothers etc. in various fields like social, economical, political, educational, scientific and other nation building activities. They are doing hard work in performing professional as well as household responsibilities very actively. Even after high level improvement in the women status in India,

they are still exploited and abused in many ways like rape, sex discrimination, etc.

Earlier in the Vedic times, women were given lots of respect and honour in the Indian society. They were given equal opportunities like men socially, intellectually and morally. They were getting complete freedom in vedic period. It is noted that women were well educated.

Regarding women's safety and reducing crime against women government of India has passed another Juvenile Justice (care and protection of children) Bill 2015 replacing the earlier Indian Juvenile law of 2000. This act is passed especially after the Nirbhaya case when accused juvenile was released. According to this act the juvenile age is 16 years in cases of heinous offenses.

*You can't cross the sea merely by standing and staring at the water.*

- Ravindranath Tagore

*Mastering other is strength. Mastering yourself is true power.*

*Live as if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever.*

- Mahatma Gandhi

*The strongest people aren't always the people who win, but the people who don't give up when they lose.*

- Anonymous

*The richest man is not he who has the most, but he who needs the least.*



# Women Empowerment

- Megha Panhalkar  
(T.Y.B.A. English)

**"Wherever you find a great man you will find a great mother or a great wife standing behind him.**

**It would be interesting to know how many great women have had great fathers and husbands behind them"**

Women empowerment means emancipation of women from the vicious grips of social, economical, caste and gender based discrimination. It means granting women the freedom to make life choices. Women empowerment does not mean deifying women rather it means replacing patriarchy with parity. Women empowerment can be defined in very simple words that it is making women powerful so that they can take their own decisions regarding their lives and well being in the family and society. It is empowering women to make them able to get their real rights in the society.

**" I am no bird, and no net ensnares me: I am a free human being with an independent will"**

As we all know that India is a male dominated country where males dominate in every area and females are forced to be responsible for only family care and live in home including other many

restrictions. Almost 50% of the population in India is covered by the females. So the full development of the country depends on the half population means women, who are not empowered and still restricted by many social taboos. In such condition we cannot say that our country would be developed in the future without empowering its half population means women. If we want to make our country a developed country, first of all it is very necessary to empower women by the efforts of men, government, laws and women too.

**" Incredible change happens in your life when you decide to take control of what you do have power over instead of craving control over what you don't".**

The need of women empowerment arose because of the gender discrimination and male domination in the Indian society since ancient time. Women are being suppressed by their family members and society for many reasons. They have been targeted for many types of violence and discriminatory practices by the male members in the family and society in India and other countries as well. Wrong and old practices about the women in the society from ancient time have taken the form of well developed customs and traditions. There is a tradition of worshipping many female goddesses in India including giving



honour to the women in society like mother, sister, daughter, wife and other female relatives or friends. But it does not mean that only respecting or honouring women can fulfill the need of development in the country, it needs the empowerment of the rest half population of third country in every walk of life.

India is a famous country for having unity in diversity where people of many religious beliefs are in the Indian society. Women have been given a special place in every religion which is working as a big curtain covering the eyes of people and help in the continuation of many ill practices (including physical and mental) against women as a norm since ages. In the ancient Indian society there were evil customs like sati pratha, dowry system, sexual violence, female infanticide, parda pratha, wife burning, sexual harassment at workplace, etc. including other discriminatory practices.

**" She is free in her wildness,  
She is a wanderess, a drop of  
free water. She knows  
nothing of borders and cares  
nothing of rules or  
customs. Time for her isn't  
something to fight against.  
Her life flows clean with passion  
like fresh water".**

All such types of ill practices are there because of male superiority complex and patriarchal system of the society. Sociopolitical rights for the women were completely restricted by the male members of family. Some of the ill practices against women have been eliminated by the open minded and great Indian people who raise their voices for the discriminatory practices against women. Through the continuous efforts of

the Raja Ram Mohan Roy, Britishers were forced to eliminate the ill practice of sati pratha. Later other famous social reformers of the India like Ishwar Chandra Vidyasagar, Acharya Vinoba Bhave, Swami Vivekananda etc. also had raised their voices and worked hard for the upliftment of women in Indian society.

In India the widow remarriage Act 1856 was initiated by the continuous efforts of Ishwar Chandra Vidyasagar in order to improve the conditions of widows in the country.

**"In societies where men  
are truly confident of their  
own worth, women  
are not merely tolerated  
but valued"**

Some of the acts passed by the parliament are Equal Remuneration Act-1976, Dowry Prohibition Act-1981, Immoral Traffic Act-1956, Medical Termination of Pregnancy Act-1971, Maternity Benefit Act-1961, Commission of Sati Act-1987, Prohibition of Child Marriage Act-2006, Preconception and Pre-Natal Diagnostic Techniques (Regulation and Prevention of Misuse) Act-1994, Sexual Harassment of Women at Work Place Act-2013 etc. in order to empower women with legal rights.

**"As long as  
She thinks of a man  
nobody objects  
to a woman thinking."**

In order to really bring women empowerment in the Indian society, it needs to understand and eliminate the main cause of the ill practices against women which is patriarchal and male dominated system of the society. It needs to be open minded and change the old mind set against women together with the constitutional and other legal provisions.



## Save The Baby Girl

- Sujata Narkar

( F.Y.B.A. )

*Little girls are heaven's flowers*

*Little girls are just angels*

*Who haven't yet spread their wings"*

*we need mother, sister, wife but why don't we  
want a girl? Why don't we want a girl ?*

Ancient Indians gave maximum respect to women. They believed that Gods enjoy only the places where women are worshipped. Man and woman are two wheels of carriage. The urban modern woman has been playing the role of nation builder. She has made progress in all fields.

Now it's time of female foeticide and it has became a big problem. We know the sacrifice and importance of our mother. Even we know the tender love relation between the brother and sister.

Our daughter is the knot that ties the family together. Without a girl a man is incomplete, a house is incomplete and the whole is world incomplete. When a girl child is born her family and her parents moan. Why ? A girl is killed even before birth. Why people are passive towards girls ? I feel they are precious as pearls.

Girls are emerging soul of faith and light. In her life she must have day and never night. A girl's life becomes

difficult as she grows and her tension slowly and gradually flows. She can handle a lot of troubles and carry heavy burdens even double. A woman can show her love and affection but in anger she becomes goddess Durga for destruction.

Jawahalal Nehru, the first Prime Minister of India had said- "You can tell the condition of a nation by looking at the status of its woman"

As regarding status of girl child it is believed that every year 12 million girls are born in the country but unfortunately only 1/3 of those survive. Some are killed in the womb. Some at the time of birth, some due to ill health and some due to poor nutritional status. This is the real fact. Who is responsible for this? Of course! We educated people. When we see the sex ratio, really it is thought provoking.

We must think over this problem through social awareness and strictly implement law of preconception and pre-diagnostic test.



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**कैटरिपिल** २०९६-१७



## BE THE BEST

Be a bush, if you can not be a tree,  
 If you can not be a bush, be a bit of grass.  
 If you can not be a highway, then just be a trail  
 If you can not be the Sun, be a star.  
 It doesn't matter you win or you fail,  
 be the best of whatever you are !

Compiled by - **Vibhavari Kadam.**  
 (T.Y.B.A. English)

## MOTHER EARTH

Mother earth, our mother earth  
 She is the only one who gives us birth.  
 The trees, soils mountains and hills,  
 All are one by one getting killed.

Mother earth, our mother earth  
 She was once full of happiness.  
 Rivers, lakes, seas and wells,  
 In this place many creatures dwell.

Mother earth, our mother earth  
 No one understands its worth.  
 People work with a lot of zeal,  
 Only to make money for their meals.



Mother earth, our mother earth  
 Oh! stop filling it with dirt.  
 We are destroying it, no one other.  
 Let us save our mother earth.

Compiled by - **Komal Gandhi**  
 (S.Y.B.A)



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**द्वितीय** २०१६-१७

## Positive Thinking

Dipti Jadhav

(T.Y.B.A. English)

If you can see the positive side of everything you will be able to live a much richer life than others" said Clestine Chua.

There would be no human on Earth who is living without any problem misconception or negative thinking. As I have mentioned above, according to Celestine Chua, people would have led a richer life if they would have seen the positive side of every aspect.

Positivity in one's life would lead an individual to acquire great success. It is like a lamp to direct through difficult paths. A person should always see the positive side of every aspect.

For instance, if an individual is participating in any competition he/ she should have positive thoughts in mind rather than negative ones. He or she should think how he or she can win that competition, or if failed to win the

same then how it is still helpful to him or her as he or she would get both good and bad experience which may be helpful to lead his or her further life.

Positive thinking helps a person to overcome bad thoughts and fear that one would have in him or her. This positive thinking would guide a person in the correct direction and would help to achieve one's goal or aim.

According to me positive thinking may develop if an individual has a good reading, positive approach towards certain circumstances, confidence in self etc.

So to live a rich life an individual must have positive thinking and thoughts as said by Celestine Chua. According to me one must be happy and share happiness among everyone which will always enhance good and positive thoughts.

*The quality of your thinking determines the quality of your life.*

- A. R. Bernard

*To succeed in your mission, you must have single minded devotion to your goal.*

- A P J Abdul Kalam



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**कृतिमा** २०९६-९७



## SAVE OUR ENVIRONMENT....

- Snehal Parte  
(T.Y.B.Com)

Environment is a heritage and common property of everybody and therefore it is responsibility of all to take care of it. The developed countries with their consumptive attitudes have already overstripped the global resources and are now worried about sustaining their development in future.

Human beings have been affecting the environment for too long to suddenly decide we should not tamper with it. A large number of species are in danger of extinction and we need to do something to save them. According to reports 15 to 17 species would become extinct due to global warming. But failing this we cannot allow for these species to die and for the earth to lose much of its biodiversity. There is every reason to believe that assisted migration will work.

Changing habitats to adjust to

climatic conditions is not unknown in the natural world. Many plant species are budding earlier in the spring. Animals are migrating ahead of time.

But it is not possible to sit back and leave nature to its own devices simply because human being are variable factors. So this global warming may cause complications in the ecosystem. If you can't take away danger from the species, you have got to take the species away from the danger.

So to save the environment and for environmental awareness through messages of environment protection, the future generation is being considered as the appropriate target group for this purpose. College students with their academic back-grounds are sensitive towards social, economic and developmental issues, the much suitable target group for reading the messages of environmental awareness.





## Friendship

Oh what joy it is  
to have a friend like you  
for giving me strength  
the way you do

For lifting me up  
when I'm falling down  
And putting a smile on my face  
When I'm wearing a frown

Thanks for being there  
and helping me grow  
your friendship means a lot  
this I'd like you to know.

Compiled by - **Dhanshri Sutar**  
**T.Y.B.A. (English)**

Even through lots of negativity  
days coming as obstacles,  
She encourages herself  
to overcome them.

There are many ups & downs  
But she always stands up  
and starts a new beginning  
with the same hope.

There is list of complaints,  
arguments, discouraging etc  
Eventhough all this she

fiawlessly completes her  
responsibility without  
an inch of complaint

She never remains the  
same as the above,  
Now she is independent,  
confident bold, capable  
of doing each & everything  
Not a struggler,  
A strong woman

It's not easy to be like her  
Non even possible  
but I will definately try  
to carry on these values further...

'A small Dedication  
to a mother  
from her Daughter.'

- **Samiksha Ghodke**  
(S.Y.Bsc)



It is always said  
that it is not much difficult  
to be a mother on to play  
a role of a mother  
But it is not at all easier  
to be a single mother

Each moment and every single day  
She struggles with a  
Evergreen flow and a smile  
on her face.

## A Struggling Life Of a Single Mother



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**कृतिमूल**

२०१६-१७



## Chemistry Class

## Think positive

Chemistry Class, Chemistry Class,  
The class, in which I do surpass!  
The class I really most enjoy  
My teacher, though, I do annoy !

Mixing that, twirling this,  
Adding till I hear a hiss  
Prompting looks up from her desk  
Towards my beaker statuesque!

Heating up, cooling down  
My teacher watches, face a frown!  
Lovely liquid, yellow bubbles,  
Teacher's ready for the troubles!

Exploding here exploding there,  
Yellow globs in teacher's hair  
It's dripping on to teacher's shawl  
And creeping down the classroom wall !

Fizzle here fizzle though,  
Oh no I think I'm in stew !  
It's eaten through the wooden floor  
And dropped below on mr. Moore

Chemistry mess much distress,  
My brew today did not impress!  
Chemistry is my favourite class,  
But that's my last, I think, alas !

Say to yourself every morning

Today is going to be a great day!

I can handle more than I think I can !

Things don't get better by worrying satisfied,

If I try to be happy about!

Don't ever think about past,  
which you have already lost.

For it is to be hobby of lazy.

who are sometimes crazy'

Don't think of future even,  
which is always uncertain.

For it is astrologer's passtime

who has got no work but enough time.

Think of the present & out in the present,  
which already in existence

For it is the joy of men,  
who are always excellent.

So I am going to make someone happy today!  
It's not good to be down !

Life is great,

Make the most of it !

Be an optimist.....

- Ankita Rahate  
(T.Y.B.Sc. Chemistry)

Compiled by - Jagruti Patankar  
(S.Y.B.Sc.)



रौप्य महोत्सवी वर्ष

**द्वितीय** २०१६-१७



LOVE



## Dad

You gave me life,  
You gave me soul.  
Then what do I need something more?  
When everything was new,  
And only support was you,  
I hold your hands tight to learn  
Ride of my bike.  
When exams were near,  
You were there,  
Who took my studies,  
So there were no worries.  
You gathered single rupee  
Which I would always spend in jiffy  
When I will be dad  
And I will have child,  
Then I will get meaning  
Of what dads are now doing !!

- Dnyanekumar Jadhav  
(S.Y.B.Sc)

## Easy and Difficult

Easy is to judge the mistakes of others,  
Difficult is to recognize our own mistakes.  
Easy is to hurt someone who loves you,  
Difficult is to heal the wound  
Easy is to set rules,  
Difficult is to follow them.  
Easy is to dream every night,  
Difficult is to fight for a dream.  
Easy is to say we love,  
Difficult is to show it every day.  
Easy is to make mistakes,  
Difficult is to learn from them.

Comiled by - Namrata Panchal  
F.Y.B.A



## TIME

Time is free,  
But it's priceless.  
You can't own it,  
But you can use it  
You can't keep it,  
But you can spend it  
Once you've lost it,  
You can never get it back.

- Ashlesha Yadav  
(T.Y.B.Sc)



# Success

- **Siddhesh Panhakar**  
**F. Y. B. Com.**

Edison, the great scientist said that success is 1% inspiration and 99% perspiration. How true it is! Without hard work and toil perseverance there can be no achievement. For getting success we must do hard work. We can see the life of successful people. They have got a great success due to their hard work. Actually success is not a substance which can be brought with money. It is very difficult to achieve. Success does not come by neglecting our duties or avoiding our responsibilities or lazing away all the time. Great heights can only be achieved by

constant or continuous climbing. They took many days and faced many difficulties.

Without regular work and hard work we can't get success. It is nothing but a mixture of will and hard work. After getting success, one can fly with pride.

Everytime, we must remember an unsuccessful man. Success is not a joke but it is a combination of sweat, determination and guts. Honesty always welcomes success. Successful people are always respected. So do hard work and be successful.

## Motivationl Thoughts

- 1) The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams.
- 2) Be sure to taste your words before you spit them out.
- 3) If you have never made a mistake then it means you have never tried something new .
- 4) Your actions and your words should always agree with each other.
- 5) Most of our problems are because we act without thinking or we keep thinking without acting.
- 6) Losers quit when they're tired. Winners quit when they've won.
- 7) Discipline is the full of achievement.
- 8) Most people have the will to win, few have the will to prepare to win.